SHRI BHERU SINGH CHOUHAN

Shri Bheru Singh Chouhan is a renowned Kabir Nirgun folk artist who has been associated with the traditional folk music and cultural heritage of Malwa for over 50 years.

2. Born on 27th July, 1961 at Mhow in Madhya Pradesh, Shri Chouhan since the age of nine, actively participated in folk singing, particularly Nirgun Gayan (a devotional folk music tradition). He has performed in various folk singing programs across villages, presenting the legendary tales of Sant Kabir, Sant Gorakhnath, Sant Dadu, Sant Meera Bai, Sant Paltunath and many other legendary saints. His soulful renditions have left a deep impact on the rural audiences, who listen to him with great reverence and devotion. He has contributed immensely by showcasing folk singing at village, district, state, national and international levels. His efforts have played a key role in keeping the tradition of Nirgun Gayan alive. His professional journey began in 1978 with folk musical instruments (Tambura and Kartal). At that time, there were no proper means of transport and there were no audio facilities. In that era, he and his team would travel on foot or bicycles to different villages to perform.

3. Shri Chouhan started presenting folk singing on All India Radio, Indore, in 1989 which gave him wider recognition. He has also contributed significantly to cassette and CD recordings of folk music. During one of his performances, while recording a cassette, he met with an accident but despite financial hardships and physical pain, he never abandoned his passion for folk singing and continued his journey with full dedication.

4. Shri Chouhan was nominated as a Member of Executive Board and Educational Committee of Kala Kshetra Pratishthan, Chennai through Department of Culture, New Delhi's notification. He was the proud presenter at the inaugural ceremony of the 10th National Cultural Festival, Rewa organized by Department of Culture in 2019. His presentation at Raising Day of Indira Gandhi Rashtriya Kala Kendra, New Delhi in 2019 also drew a loud applause from the audience and the authorities.

5. Shri Chouhan's performances have played a key role in spreading social awareness on important issues such as eradication of untouchability, social equality, women's education and girl child empowerment. Through folk storytelling of legendary saints, he has enlightened rural communities on social reforms. His efforts have helped in strengthening cultural heritage, promoting communal harmony and preserving rural traditions. Conducted over 6,000 folk performances to inspire and educate the masses.

6. Shri Chouhan has been honored at various cultural festivals such as National Cultural Festival (2015-2016) and Kabir Mahotsav (2018). He has presented his folk music in presence of the Hon'ble President Shri Ramnath Kovind and Prime Minister Shri Narendra Modi. Along with his presentations at Sadbhawna Utsav organized by the Department of Culture, Lucknow (1993), Kabir Bhajan Sandhya in the event organized by Uttar Madhya Sanskritik Kendra, Prayagraj in (1999), Kabir Utsav organized by Sahitya Academy, New Delhi at Varanasi (2005), Indira Gandhi Rashtriya Kala Kendra, New Delhi (2012), Tribal Museum (2014), Bharat Parv event organized by Swaraj Sansthan in Bhopal (2010), he has presented folk singing at Bharat Bhawan, Bhopal in the event organized by Madhya Pradesh Adivasi Lok Kala Parishad for the delegation of World Bank during their visit to Madhya Pradesh.

श्री भेरूसिंह चौहान

श्री भेरूसिंह चौहान प्रसिद्ध कबीर निर्गुण लोक कलाकार हैं जो 50 वर्षों से अधिक समय से मालवा के पारंपरिक लोक संगीत और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े हुए हैं।

2. 27 जुलाई, 1961 को मध्य प्रदेश के महू में जन्मे, श्री चौहान नौ वर्ष की आयु से ही लोक गायन, विशेषकर निर्गुण गायन (एक भक्ति लोक संगीत परंपरा) में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं। उन्होंने संत कबीर, संत गोरखनाथ, संत दादू, संत मीरा बाई, संत पलटूनाथ और कई अन्य महान संतों की पौराणिक कथाओं को प्रस्तुत करते हुए गाँवों में विभिन्न लोक गायन कार्यक्रमों में प्रस्तुति दी है। उनकी भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने ग्रामीण दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ा है, जो उन्हें बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ सुनते हैं। उन्होंने गाँव, जिला, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोक गायन का प्रदर्शन करके बहुत बड़ा योगदान दिया है। उनके प्रयासों ने निर्गुण गायन की परंपरा को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी पेशेवर यात्रा वर्ष 1978 में लोक संगीत वाद्ययंत्रों (तंबूरा और करताल) से शुरू हुई। उस समय, परिवहन के उचित साधन नहीं थे और कोई ऑडियो सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। उस समय, वह और उनकी टीम प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न गाँवों में पैदल या साइकिल से यात्रा करते थे।

3. श्री चौहान ने वर्ष 1989 में इंदौर स्थित आकाशवाणी पर लोकगायन प्रस्तुत करना शुरू किया, जिससे उन्हें व्यापक पहचान मिली। उन्होंने लोकसंगीत के कैसेट और सीडी रिकॉर्डिंग में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपनी एक प्रस्तुति के दौरान कैसेट रिकॉर्ड करते समय वह दुर्घटना के शिकार हो गए, लेकिन आर्थिक तंगी और शारीरिक पीड़ा के बावजूद उन्होंने लोकगायन के प्रति अपने जुनून को कभी नहीं छोड़ा और पूरी लगन के साथ अपना सफर जारी रखा।

4. श्री चौहान को संस्कृति विभाग, नई दिल्ली की अधिसूचना के माध्यम से कला क्षेत्र प्रतिष्ठान, चेन्नई के कार्यकारी बोर्ड और शैक्षिक समिति के सदस्य के रूप में नामित किया गया। वह वर्ष 2019 में संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित 10वें राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव, रीवा के उद्घाटन समारोह के प्रमुख प्रस्तुतकर्ता थे। वर्ष 2019 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के स्थापना दिवस पर उनकी प्रस्तुति ने दर्शकों और अधिकारियों से जोरदार तालियाँ भी बटोरीं।

5. श्री चौहान के प्रदर्शनों ने अस्पृश्यता उन्मूलन, सामाजिक समानता, महिला शिक्षा और बालिका सशक्तीकरण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर सामाजिक जागरूकता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महान संतों की लोक कथाओं के माध्यम से, उन्होंने सामाजिक सुधारों पर ग्रामीण समुदायों को जागरूक किया है। उनके प्रयासों ने सांस्कृतिक विरासत को मजबूत करने, सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने और ग्रामीण परंपराओं को संरक्षित करने में मदद की है। उन्होंने लोगों को प्रेरित करने और शिक्षित करने के लिए 6,000 से अधिक लोक प्रस्तुतियां दी।

6. श्री चौहान को राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव (2015–2016) और कबीर महोत्सव (2018) जैसे विभिन्न सांस्कृतिक समारोहों में सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में अपना लोक संगीत प्रस्तुत किया है। संस्कृति विभाग, लखनऊ द्वारा आयोजित सद्भावना उत्सव (1993), उत्तर मध्य सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कबीर भजन संध्या (1999), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा वाराणसी में आयोजित कबीर उत्सव (2005), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली (2012), जनजातीय संग्रहालय (2014), स्वराज संस्थान द्वारा भोपाल में आयोजित भारत पर्व कार्यक्रम (2010) में अपनी प्रस्तुतियों के साथ–साथ उन्होंने विश्व बैंक के प्रतिनिधिमंडल के मध्य प्रदेश के दौरे के दौरान मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भारत भवन, भोपाल में लोक गायन प्रस्तुत किया है।